ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-8* October- 2020
Innovation The Research Concept

हाड़ौती के दलितों में सामाजिक जागरण से समस्याओं का निदान व निराकरण

Diagnosing and resolving problems with social awareness in Hadoti's Dalitas

Paper Submission: 12/10/2020, Date of Acceptance: 25/10/2020, Date of Publication: 26/10/2020

घनश्याम मेघवाल
शोधार्थी,
इतिहास विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, झालावाड,
राजस्थान,भारत

इकबाल फातिमा
सहायक प्राध्यापक
इतिहास विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, झालावाड,
राजस्थान,भारत.

सारांश

समस्त विषय की सारभूत एवं तथ्यात्मक वस्तु है। यह विषय वस्तु में आत्म स्वरूप समान है। इसमें दलितों की स्थिति समस्याओं के लिए ब्रिटिश सरकार व रियासत सामंतवाद के दृष्टिकोण को रेखाअंकित किया है। एवं दलितों की समस्याओं का निर्धारण व निराकरण हेतु सामाजिक संगठनों सम्मेलनों वाचन के प्रयास किए गए हैं एवं निष्कर्ष स्वरूप आधुनिक भारत में दलितों में चेतना व जागृति द्वारा दलितों द्वारा उन्नति विकास व ज्ञान विकास शिक्षा सामाजिक आर्थिक धार्मिक स्वतंत्रता और समानता की क्रांति साबित कर जातिवाद अंधविश्वास से मुक्त एक नया युग शुभारंभ किया है।

Is the substantial and factual object of the whole subject. It is the same form of self in the subject matter. In this, the situation of the Dalits has outlined the approach of the British government and princely feudalism to the problems. In order to determine and solve the problems of Dalits, efforts have been made to read the social organizations' conferences and as a result, in modern India, Dalits through development of consciousness and awareness, development and knowledge development, education, social economic, religious freedom and equality revolution prove casteist superstition Free has launched a new era.

मुख्य शब्द : दलितों, अनुसूचित जाति, जनजाति, सैद्धान्तिक।
Dalits, Scheduled Castes, Tribes, Theories.

प्रस्तावना

दलितों में अस्पृश्यता का निवारण

अस्पृश्यता के विरूद्ध बाबा साहब के संघर्ष को समझने से पूर्व उसकी तात्विक भूमिका को ध्यान में लेना आवश्यक है। सैद्धान्तिक दृष्टि से विचार करे तो प्रत्येक पक्ष से अस्पृश्यता पाप है।

मानवीयता

मानव एक जाति है जो उसे पशु, पक्षी, पादप आदि अन्य जातियों से पृथक् करती है। अतः प्रत्येक मानव को मनुष्य के नाते समान अधिकार प्राप्त है।

सांस्कृतिक दृष्टि

हिन्दुत्व के विकास में सबका योगदान है। राम, कृष्ण–विश्वामित्र, बुद्ध, महावीर, जैसे क्षत्रिय, ब्राह्मण वशिष्ठ मुनि, सप्त ऋषियों की संतानें, हर्ष, अग्रसेन जैसे वैश्य, ऐतरेय, सत्यकाम जाबालि, वाल्मिकी, वेदव्यास, तुकाराम, ज्ञानेश्वर, रविदास, चोखा मेला जैसा तथा कथित शुद्र सभी इस बात को सिद्ध करने वाले ऐतिहासिक उदाहरण है। कहकर नहीं चलाया जा सकता। व्यक्ति के मानवीय अधिकार का निर्माण शब्द से नहीं होता, यह जन्म से प्राप्त होता है। यह नैसर्गिक न्याय है कि जन्म या जाति के आधार पर समान नागरिक अधिकारों से किसी भी व्यक्ति को वंचित नहीं किया जा सकता।

सामाजिक दृष्टि

समाज जोड़ने से बना है। समाज स्नेह से बनता है, घृणा से तो कबीले बनते है जो झूठें अहंकार में सतत् संघर्ष की भूमिका बनाते है। समाज के लिए बंधुता, समता, समानता व समरसता प्राथमिक आवश्यकता है ।

आध्यात्मिक दृष्टि

''आत्मवत् सर्वभूतेषु य पश्चति सः पण्डितः'' कहते है विद्वान उसी को कहा है जो सबसे एक ही आत्मा की अनुभूति करता है सबमें एक हो आत्मा का विस्तार है तो उन परमात्मा के अंशों से घृणा कैसे ?

धार्मिक दृष्टि

'धर्मो धारयते प्रजाः प्रजा का धारण करने वाले नीति–नियमों का समुच्चय धर्म कहलाता है। एक ही धर्म को मानने वाले लोगों में वैमनस्य भेद बुद्धि उत्पन्न करने वाली बातें धर्म सम्मत कैसे हो सकती है ?

स्वातंत्र्य दृष्टि

बिना समता, समानता व समरसता के स्वतंत्रता निरर्थक है सब लोग परस्पर व्यवहार में स्वतंत्र कैसे कहला सकते है ?

राजनीतिक दृष्टि

प्रजातंत्र में सभी नागरिक समान मान को प्राप्त होने के उपरांत भी अनुसूचित जाति, जनजाति को न्याय व संरक्षण के लिए कानूनी प्रावधान आज भी रखना पड़े इसका अर्थ है समाज में सबको समानता प्राप्त होने व स्वप्न अभी भी अधूरा है।

आर्थिक दृष्टि

'सर्वे भवन्तु सुखिनः' तथा सभी का अभ्युदय धर्म है– यह आर्थिक विकास का आधार है। बिना बंधुता, समता, समानता व समरसता के अंत्योदय का विचार उत्पन्न नहीं हो सकता। दूसरा, समाज की उन्नति के लिए अर्थोपार्जन के विभिन्न कार्य करने पड़ते है। कार्य छोटा बड़ा हो सकता है पर उसके कारण अस्पृश्यता कैसे हो सकती है ? कोई जूते की दुकान चलाकर भी अस्पृश्यों और एक अध्यायपन करके भी अस्पृश्यों कैसे हो सकता है ?

कर्त्तव्य दृष्टि

उपकार या दया नहीं, सबके साथ समान व्यवहार मानव मात्र का कर्त्तव्य है इस प्रकार अस्पृश्यता को किसी की भी सैद्धान्तिक स्वीकृति नहीं है– धर्म शास्त्र समता, बाबा रामदेव, पीपाजी, गोगाजी, पाबूजी, हरबू जी ने अस्पृश्यता को स्वीकृति प्रदान नहीं की, इसे समाप्त करने का प्रयास किया। उडूपी में सभी धर्माचार्यों ने प्रस्ताव किया –''हिन्दवः सौदरा सर्वे न हिन्दू पतितौ भवेत्।'' अवतार, लोक देवता, संत, समाज सुधारक सतत् प्रयत्नशील रहे है, किन्तु अब तक भी हम इसे पूर्णतया समाप्त करने में सफल क्यों नहीं हुए है ? बाबा साहब कहते है कि इसका कारण ''अस्पृश्य लोगों के मन की सनक है। ''संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्री गुरूजी भी इसका कारण ''सवर्णों के मन का भाव'' बताते है। केवल सैद्धान्तिक पक्ष में व्याख्यान था। अस्पृश्यता निवारण के पक्ष में प्रस्तावों से हिन्दू समाज के दृढ़ मूल इस अमानवीय रूढ़ि को समाप्त करना सुगम नहीं है। मतांतरण के लिए तथाकथित अछूतों के सहयोग का आंकलन करने के लिए बुलाई आम सभा है।

हिन्दुओं को उन क्रूर लोगों में रखा जा सकता है जिनकी कथनी और करणी में जमीन आसमान का अंतर है। उसके मुँह में, राम और बगल में छुरी है। वे संतों की तरह बात करते है और कसाईयों की तरह बरताव। वे उन लोगों की संगत में रहते है। जिनका मानना है कि ईश्वर सर्वव्यापी है लेकिन मनुष्य के साथ जानवरों से भी बुरा व्यवहार करते है। वे ढ़ोंगी है जो चीटियों को तो शक्कर खिलाते है, लेकिन इंसान को पीने के पानी से वंचित रखकर उसकी नाल ले लेते है, वे ढोंगी है तत्कालीन परिस्थितियों में समाज के व्यवहार में इस संसार को जानते थे अतः उदूपी विश्व हिन्दू सहोदर भाई है कोई हिन्दु पतित नहीं होता'' श्री गुरूजी ने इस सम्मेलन के पश्चात् मकर संक्रान्ति के दिन संघ के कार्यकर्त्ताओं को एक पत्र लिखा, जिसमें अस्पृश्यता की समस्या का समाधान ढूंढ़ने के लिए व्यावहारिक सुझाव दिये थे। इस पत्र के कुछ अंश यहाँ उदृत करना समीचीन होगा, जिनकी आज भी प्रासंगिकता है–

''अस्पृश्यता का निवारण करने के लिए जो प्रस्ताव पारित किया गया है और जिसे सभी आचार्यों, धर्म गुरूओं मठाधिपतियों और अन्य दिव्य महापुरूषों ने अपना आशीर्वाद प्रदान किया है, उस प्रस्ताव को केवल मौखिक शब्दावली से जीवन में नहीं उतारा जा सकता। सैकड़ों वर्ष पुराने दुराग्रह केवल शब्दों और चिंतन करने मात्र से नष्ट नहीं हो सकते। इस सम्बन्ध में हमें कठोर परिश्रम करना होगा तथा नगर–नगर, ग्राम–ग्राम, घर–घर में तथा जन–जन में सही परिप्रेक्ष्य में इस प्रस्ताव का प्रचार करना होगा। लोगों को यह समझाना होगा कि यह प्रस्ताव उन लोगों को युगानुरूप सुविधाएँ प्रदान करने के लिए नहीं है, तथा एक ग्रहणीय सिद्धान्त प्रदान करने के लिए नहीं है, अपितु एक ग्रहणीय सिद्धान्त तथा जीवन–पद्धति में सुधार के लिए एक विनम्र प्रयास है यह प्रस्ताव उन पापों का प्रायश्चित मात्र है जो हिन्दू समाज ने विगत काल में किए हैं। लोगों का हृदय परिवर्तन करना है तथा उनके दृष्टिकोण एवं व्यवहार में भावात्मक नैतिक परिवर्तन लाना है। जो लोग सबसे निचले धरातल पर खड़े हैं, उनके आर्थिक और राजनीतिक उत्थान के लिए काम करना और शेष समाज के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा होने का उन्हें सामर्थ्य देना यह अत्यन्त कठिन काम है। किन्तु यह कार्य अपने आप में पर्याप्त नहीं है, क्योंकि ऐसी समानता अलगाववाद की भावना को नष्ट करके ही लाई जा सकती है। हम जो कार्य पूरे जोश से करना चाहते हैं, वह केवल आर्थिक और राजनीतिक समानता का नहीं है। हम वास्तविक, पूर्ण समरसता चाहते है। यह परिवर्तन शासकीय योजनाओं की बलपूर्वक थोपी गई राजनीति से दूर है। राजनीतिक दलों के चतुराई पूर्ण आधे–अधूरे राजनीति से दूर है। राजनीतिक दलों के चतुराई पूर्ण आधे–अधूरे प्रयासों से इस कार्य में सफलता प्राप्त करना असंभव है। सभी लोगों के दैनन्दिन व्यवहार में उनके हृदय से इस भावना का उद्वेग उत्साह के साथ फूटना चाहिए। वे सब मिलकर एक आध्यात्मिक, नैतिक और सामाजिक घरातल पर यह कार्य करे। सम्मेलन में विद्यमान सभी सहभागियों के साथ वे लोग भी जो इस कार्य के प्रति सहानुभूति रखते है और इस विचार का समर्थन करते है, उन सभी को अनिवार्यतः सामने आना चाहिए और सामाजिक समरता के साथ को कंधा देकर आगे बढ़ाना चाहिए। इसके साथ ही रूढ़ियों में जकड़े

दूषित दुराग्रहों को शक्तिशाली घक्का देकर–चूर–चूर कर देना चाहिए। हमें इस कार्य में अनेक बाधाओं, घोर कष्टों और कठिनाईयों से आमना–सामना होने का पूर्वानुमान कर लेना चाहिए। कार्य करते हुए प्रायः हमें ऐसा भी अनुभव हो सकता है कि हम एक निरर्थक कार्य कर रहे है, जिसका हमें श्रेय नहीं मिल सकता। किन्तु तत्काल परिणाम प्राप्त करने या किसी चमत्कार से प्राप्त सफलता की हमें आशा न करके वास्तविकताओ का सामना करना चाहिए और इस प्रकार हम सनातन या शाश्वत् धर्म क गौरव तथा प्रकाशमान कीर्ति को स्थापित करने में समर्थ हो सकें।

अस्पृश्यता एवं वर्णव्यस्था

वर्णव्यवस्था के विकृत रूप जाति कथा कालांतर में ऊँच–नीच तथा छूआछूत के आधार पर जातियों का अमानवीय श्रेणीकरण अपने समाज में हो गया यह सत्य है, किन्तु सम्पूर्ण समाज ने इसे एकमत व एक मन से स्वीकार कर लिया, ऐसा नहीं है। संत बनने, मंदिर बनवाने, अपना कुँआ खुदवाने पर रोक नहीं थी किन्तु सर्वसमाज की सामूहिक स्वीकृति के मंदिर, जल स्रोत, श्मशान नहीं रह पाये यह भी सत्य है। समाज में इस कुरीति को समाप्त करने के सतत् प्रयत्न करने वाले लोगों की भी श्रृंखला है, भले ही उनके प्रयास फलवती न हुए हो या उनकी प्रयत्न परम्परा उनकी मृत्यु के साथ ही लुप्त रूक गई हो। इस प्रकार के प्रयत्नों की दो धाराएँ दिखाई देती हैं –

दृश्यानुभूति से उत्पन्न संवेदना

संवेदनशील हृदय वाले लोगों की कर्म प्रेरणा का आधार–अमानवीय व्यवहार से द्रवित मन की पीड़ा होती है। इससे दयाभाव उत्पन्न होता है या पुण्य प्राप्ति की इच्छा से 'परोपकाराय पुण्याय', 'दया कर्म का मूल' भाव से अस्पृश्यता निवारण के कार्य में लगे लोक–देवता, संतों, भक्तों, समाज सुधारकों की अपने देश में पर्याप्त संख्या है। रामानन्द, कबीर, तुकाराम, बाबा रामदेव, नारायण गुरू ज्योतिबा फुले जैसे कई नाम गिनाये जा सकते है।

महात्मा गांधी के अस्पृश्यता निवारण के सम्बन्ध में दृष्टि का प्रकार यही है उनका विचार था कि परम्पराओं से निर्मित होने वाली समाज व्यवस्था के ताने–बाने को बिना बिगाड़े समाज में परिवर्तन लाया जाना चाहिए। उनकी भूमिका थी कि जो सबल है, उन्हें जीव दया और मानवता के आधार पर दुर्बलों की सहायता करना चाहिए। इसका कारण है–कर्म आधारित जाति या वर्णव्यवस्था कैसे भी बनी हो उनसे प्राप्त सुविधाएँ कालांतर में निहित स्वार्थ उत्पन्न करती है और उन्हें बनाये रखने का प्रयत्न होता है। हरिजन, मेहत्तर, राजा–ये दृश्यानुभूति से उत्पन्न संवेदना तथा आत्म ग्लानि, किन्तु समादर का सम्मान देने का दिखावा करते हुए 'सफाई कर्मचारी' या 'मेला ढ़ोने' की व्यवस्था को बनाये रखने की स्वार्थ दृष्टि में से गढ़े गये शब्द है। उनसे तथाकथित सेवा लेना बंद नहीं किया और अस्पृश्यता निवारण के नारे–प्रवचन चलते रहें। वैकल्पिक पद्धति के शौचालय निर्मित होने पर ही उन्हें सिर पर मैला ढ़ोने की आमानवीय कृति से मुक्ति मिली सम्मान तो अभी भी पूरा मिलना शेष है तथाकथित सम्मान भी कानूनों की बाध्यता के कारण या दण्ड के भय से है। स्वाभाविक समरसता मन का विषय है, कानून का नहीं। यही कारण है कि जिस व्यक्ति ने छुआछूत की राक्षसी प्रथा से पीड़ा अनुभव कर परिवर्तन का प्रयत्न किया वह वहीं तक चला जहाँ तक समान संवेदना वाले व्यक्तियो का समूह कार्य प्रवण रहा, यह दृश्यानुभूति जब संवेदना जाग्रत न कर सकी तो उसके बाद उनका काम भी ठप्प हो गया) आत्मानुभूति से उत्पन्न आक्रोश–जिसने अस्पृश्यता के दंश की पीड़ा को स्वयं झेला है, अधिकारों का हनन और दलन जिसने भोगा है, इस भोगे हुए यथार्थ की आत्मानुभूति आक्रोश तो उत्पन्न करती ही है, परिवर्तन की तीव्र आकांक्षा का आधार भी बनती है। इसलिए दलितोद्धार के कार्य में लगने वाले कार्यकर्ता आत्मानुभूति प्राप्त होने चाहिए। स्वामी विवेकानन्द ने सम्भवतया सबसे तीखे प्रहार किये किन्तु इस कार्य के सम्बन्ध में उनकी दृष्टि विचारणीय है। केरल की दशा देखकर स्वामी विवेकानन्द ने डॉ. पालपू को सलाह दी कि तथाकथित अस्पृश्य वर्ग में जन्म लिये किसी धार्मिक व्यक्ति द्वारा अस्पृश्यता निवारण का कार्य शुरू कराना चाहिए। स्वाभाविक ही डॉ. पालपू की दृष्टि नारायण का कार्य शुरू करना चाहिए। स्वाभाविक ही डॉ. पालपू की दृष्टि नारायण गुरू की ओर गई। उरू–जाति, ऊरू मत, ऊरू देव (एक जाति, एकमत, एक देव) की घोषणा के साथ ही केरल में सामाजिक क्रांति का बीजारोपण हुआ और बिना हल्ला–गुल्ला–अस्पृश्यता निवारण हो गया।

'अस्पृश्यता निवारण संघ' के ठक्कर बापा को पत्र में बाबा–साहब ने भी इसी भूमिका की ओर संकेत किया है–

''यदि अस्पृश्योन्नति के कार्य के प्रति मन में पीड़ा व आस्था वाले व्यक्तियों की आवश्यकता है, तो क्यों न उनका चुनाव अस्पृश्यों में से ही किया जाए ? इस कार्य के लिए प्रेम एवं आत्मीयता की भावना का होना अनिवार्य है।''

सामाजिक समरसता व व्यवस्था में सुधार

राजनैतिक शक्ति ही सभी रोगों का एक मात्र उपचार नहीं है। अछूतों की मुक्ति समाज सुधार में ही है। सम्पूर्ण मानव समाज तभी प्राणवान अर्थात् जीवनदाय है जब उसमें पूर्ण मानवतावाद समाज के दर्शन हो, मानव से ही समाज का निर्माण हुआ है व समाज से इस काल कल्वित देश, राष्ट्र, विश्व का निर्माण हुआ है यह मानवता का चरम हिन्दू है। मानवता जब नष्ट हो चुकी होती है और यह सभी मानवदर्शन का अभिप्राय है जो मष्तिष्क व विचारों का एक पुंज है जिसमें मानवता व पशुता का विभेद मानववाद के दृष्टिकोण से स्पष्ट किया जा सकता है। जिसमें मानव का और यही विश्व सभ्यताऐं संस्कृतियाँ मानव दृष्टिकोण का दर्शन को स्पष्ट करती है व करती आयी है। इसके लिए समता युक्त अदल–बल उत्साह और प्रखर तर्क शक्ति मानव सभ्यता के लिए अवश्य हो। वे हजारों सालों से रूढ़ियों, कुप्रथाओं तथा पाखण्ड़ो विडम्बनाओं अनुकूल समाज जो भारत के क्षेत्रों, प्रान्तों सदूर अंचलों में बसे हुए व्यक्तियों का एक सूत्र में बन्धें होने का परिचायक हो जो मातृत्व, समत्व एवं एकत्व पर आधारित हो कर निर्माण करने से उत्सुक हो ताकि भारत

विश्व पटल पर परमवैभव राष्ट्र के रूप में स्थापित हो सके। इस पाखण्ड–आडम्बर तथा छल कपट षढ़यन्त्र, देश–विद्रोह से मुक्त महामानव अम्बेडकर ने पहचाना, लेकिन समझ जाना अभी बाकी है शान्तचित तथा प्रबुद्ध चेतना के साथ उनके जीवन दर्शन और क्रियाकलापों पर ध्यान देकर, जड़ीभूत भारतीय समाज को चैतन्य बनाने की अधिक आवश्यकता है। मानव की समरसता सत्याग्रह की सफलता उसे करने वाले व्यक्ति के आत्म विश्वास पर निर्भर होती है और आत्म विश्वास ज्ञान और इस विश्वास, ज्ञान, विवेक से आता है कि वह जो कर रहा है, यह पूर्ण सत्य और नैतिक है जहाँ समानता है वहाँ सामुदायिकता है और यह कदम सत्याग्रह है। वास्तव में सत्याग्रह गीता का मूल सिद्धान्त है।'' बाबा साहब के जीवन का यह संघर्ष में बाबा साहब के सामने यक्ष प्रश्न खड़े किये और आकूचन किया कि कोई युधिष्ठिर उनका युक्तियुक्त उत्तर दे। बाबा साहब के प्रश्न इस प्रकार है।

सामाजिक न्याय और संविधान

दलितो उद्धार में संवैधानिक भूमिका का योगदान अत्यन्त ही महत्वपूर्ण रहा है। संसार में जन्में प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं के गुणों के आधार पर उन्नति करने का अधिकार है और और यदि कोई समाज–व्यवस्था उसे अधिकार से वंचित करती हो तो वह समाज व्यवस्था समाप्त कर दी जानी चाहिए।

किन्तु बाबा साहब को व्यक्ति स्वातंत्र्य की यूरोपीय भौतिकवादी संकल्पना स्वीकार नहीं, बाबा साहब व्यक्ति के जीवन में धार्मिक आधार को आवश्यकता मानते है। इसके बिना व्यक्ति स्वातंत्र्य और नैतिकता के बीच समन्वयवादी हो ही नहीं सकता। बाबा साहब कहते है–

युवकों की धर्म विरोधी प्रवृत्ति देखकर मुझे दुःख होता है। कुछ लोगों का मानना है कि धर्म अफीम की गोली है, परन्तु यह सत्य नहीं है। मेरे अंदर जो अच्छे गुण हैं, अथवा मेरी शिक्षा के कारण समाज का जो कुछ हित हुआ है, वह मेरे अंतर्मन की धार्मिक भावना के कारण ही है। मुझे धर्म चाहिए, पर धर्म के नाम पर चलने वाला पाखण्ड नहीं।'

बेरार प्रान्त अस्पृश्य परिषद् (द्वितीय सम्मेलन) अमरावती में बाबा साहब व्यक्ति विकास की समानता का ही प्रश्न पूछते है।

उन्हें हैरानी होती है कि यदि वे भी हिन्दू है तो उन्हें हिन्दुओं की तरह अधिकार क्यों नहीं मिले है ? वे समानता से जुड़े सवाल करते है। वे समानता का यह अधिकार प्राप्त करने के लिए जागरूक हुए है।''

महाड़ सत्याग्रह के समय बाबा साहब कहते है –''कृपया यह कतई न समझे कि सत्याग्रह समिति ने आपकों महाड़ झील का पानी पीने के लिए बुलाया है। आपने कभी इस पानी का प्रयोग नहीं किया है। ऐसा नहीं है कि यदि हम इसका प्रयोग नहीं करते तो मर जाएँगें। हमारा लक्ष्य यह सिद्ध करना है कि दूसरों की तरह हम भी मनुष्य है। यही कारण है कि सामाजिक समानता की स्थापना के लिए यह सम्मेलन बुलाया गया है।'' आगे वे कहते है– ''कुछ लोग समानता की क्षमता अलग होती है। उन्हें समान कैसे माना जा सकता है ? लेकिन ये लोग समानता की संकल्पना पर हँसते है कि हर व्यक्ति की मानसिक और शारीरिक क्षमता अलग होती है। उन्हें समान कैसे माना जा सकता है ? लेकिन ये लोग समानता का सही अर्थ नहीं जानते। वे यह नहीं समझते कि दूसरों पर नियंत्रण करने का अधिकार जन्म के आधार पर नहीं दिया जा सकता । यह गुण के आधार पर मिलना चाहिए।''

हिन्दू समाज के अंग तो अस्पृश्य क्यों ?

यदि तथाकथित स्पृश्य–अस्पृश्य सभी लोग हिन्दू समाज के अंग है तो किसी भी व्यक्ति को जो अधिकार प्राप्त है वे सभी को प्राप्त होने चाहिए। बाबा साहब कहते है ''ऐसा नहीं है कि छुआछूत से सिर्फ अछूतों को नुकसान हुआ है। इससे सवर्णों को भी नुकसान हुआ है और सबसे अधिक राष्ट्र को हुआ है जिन लोगों को नीचे देखना पड़ता है, उनका अपमान तो होता ही है, लेकिन जो दूसरों का अपमान करते है, वे अपनी नैतिकता का पतन करते है, बाबा साहब कहते है –''इमानदारी से कहूँ तो छुआछूत इतनी अमानवीय है कि हममे से कई इसे हटाने के लिए अपने प्राण भी दे सकते है। स्पृश्यों का मानना है कि हमारे छूने से अपवित्र हुई चीजों को गोमूत्र छिड़ककर पवित्र किया जा सकता है। आपके ही धर्म के व्यक्तियों के छूने से वस्तुएं अपवित्र हो जाती है और उसे एक पशु के पेशाब से पवित्र किया जा सकता है। यह शर्मनाक सोच है।''

समान पनघट

महाराष्ट्र के एक कर्मठ समाज सुधारक श्री एस. के.बोले ने मुम्बई विधान परिषद् में यह प्रस्ताव प्रस्तुत किया कि ''सरकार द्वारा या सार्वजनिक धन से संचालित संस्थाएँ अदालत, विद्यालय, चिकित्सालय, कार्यालय, धर्मशाला, कुंआ, जलाशय, पनघट, तालाब इन स्थानों में प्रवेश करने और उनका प्रयोग करने का अधिकार सरकार अछूत वर्गों को भी प्रदान करें। स्वर्ण हिन्दू इतने उदार और शांति प्रिय है कि उनके इस धर्म में अनेक संत पैदा हुए है। दूसरों का उपकार करना उनका विशेष गुण है। और दूसरे के दर्द देना वे पाप समझते है वे गाय जैसे निष्पाप पशुओं के साथ साँप जैसे खतरनाक जीव की भी पूजा करते है ऐसे नेक हिन्दू अपने ही धर्म के लोगों को पहाड़ झील से पानी नहीं भरने देते है।''मिलिन्द महाविद्यालय के प्राध्यापक ने एक बार बाबा साहब से पूछा – ''बाबा साहब आप ब्राह्मणों के विरूद्ध क्यों हों ?

1. बाबा साहब ने उत्तर दिया –My boy, had I ban against Brahmins and Hindus, you would not have been hare मैरी संस्था के शिक्षक अधिकतर ब्राक्तण ही है। मेरा विरोध ब्राह्मण जाति से नहीं है पुरोहितवाद से है।''
2. सबका मंदिर – मंदिर भगवान के होते है भगवान सबके है तो मंदिर में सबके प्रवेश प्रतिबंधित क्यों ? आप अपने घर में मंदिर बना सकते है, जाति का पृथक ईश मंदिर बनाकर पूजा कर सकते है पर जगदीश के मंदिर में सब नहीं जा सकते, यह आश्चर्यजनक है।

बाबा साहब सत्याग्रह की तात्विक भूमिका बताते है।

''हिन्दूत्व जितनी स्प्रश्यों की सम्पत्ति है उतनी ही अस्प्रश्यों की भी है। इस बिन्दुत्व की प्रतिष्ठा वशिष्ठ जैसे

ब्राह्मणों ने, श्री कृष्ण जैसे क्षत्रियों ने, हर्ष जैसे वैश्यों ने और तुकाराम, जैसे ने की है। उतनी ही वाल्मिकी, चोखा मेला और रविदास आदि अस्पृश्यों ने भी की है।

बाबा साहब बिन्दुओं की वैचारिक निरर्थकता पर सवाल करते है– हिन्दुओं का आचरण हैरानी भरा है तब तक छुआछूत का बर्बर नियम, पाप और धर्म, सार्थक और निरर्थक सब उप पर ही लागू होता है।

हिन्दू धर्म के सिद्धान्त और व्यवहार में अंतर क्यों ? बाबा साहब ने कहा है कि हिन्दू धर्म का सिद्धान्त ईसाई और मुस्लिम मजहबों के सिद्धानों की अपेक्षा कई गुना अधिक समता के तत्व का पोषक है। समानता के साम्राज्य की स्थापना के लिए इससे बड़ा आधार मिलना मुश्किल दिखाई देता है। बाबा साहब का आंकलन है –''एक समय में मिशनरी का यह स्वीकार करना होगा। यदि ऐसा नहीं होता तो भारत में इसका इतना प्रचार नहीं हो सकता थां यह भी स्वीकार करना होगा कि अब मिशनरी नहीं रहा। अतः 'बाबा साहब' कहते है – ''यदि आप मुझसे पूछे तो मेरा आदर्श समाज समानता, स्वतंत्रता और बंधुभाव के आधार पर बनेगा।

साहित्य अवलोकन

दलित साहित्यों का अवलोकन व मूल्यांकन किया जिसमें दलितो की सामाजिक व जाति की वस्तु स्थिति प्रकट की गयी एवं साथ ही दलितों की हाडौती क्षेत्रों में बेकारी, भूखमरी, बेरोजगारी अस्प्रश्यता भेदभावो अशिक्षा एवं आसाक्षरता गरीबी के कारण दलित का जीवन अत्यन्त विकट व विषम परिस्थिति में बीता है। पूर्व काल की वर्ग व्यवस्था से लेकर आधुनिक (ब्रिटिश) काल में दलित की स्थिति में सुधार हुआ है। जिस कारण आज राज्य व केन्द्रीय सरकार में दलितों को प्रतिनिधित्व व रोजगार व शिक्षा का मौलिक अधिकार मिला है। यह तत्कालीन परिस्थितियों सरकार एवं राजा, महाराजा, सामान्तों व जागीरदारों के मूलभूत दृष्टिकोण पर आधारित दलित परिप्रेक्ष्य में लिखा गया शोध जो दलितोद्वार व दलित चिन्तन व विचार दर्शनों का भी साहित्य अवलोकन किया गया जिसमें दलित चेतना व जागृति से उनमें आत्मविश्वास व आत्मसम्मान के साथ जीने का अधिकार मिला है व दलितों में सामाजिक व आर्थिक को ही आयी है जिससे राष्ट्र धारा में सम्मलित होकर राष्ट्र कर क्षमता व अखण्डता में अग्रणी उन्नति का पयार्य है।

अध्ययन का उददेश्य

दलितों में सामाजिक जागरण का मुख्य उद्देश्य दलितों में उनकी स्थिति, समस्याओं का मूल्यांकन व अवलोकन व समस्याओं का निदान व निराकरण करता है एवं चेतना एवं जागृति लाना जिससे वह सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक व शैक्षणिक क्षेत्र में उन्नति व विकास कर सके। दलितों का जीवन स्तर ऊँचा उठ सके। उन्हें भी आम नागरिक की तरह जीने का हक मिलें। दलितों में जो बेरोजगारी, अशिक्षा, दरिद्रता, भूखमरी, गरीबी अस्पृश्यता व भेदभाव से मुक्ति। प्राचीनकाल से चली आ रही जाति व्यवस्था एवं दमन, शोषण, अत्याचार से मुक्ति पाकर भ्रातत्व व बन्धूता, समानता का अधिकार मिलता है।

निष्कर्ष

इसे सन्दर्भ में राष्ट्रीय संत, महापुरूषों, दार्शनिक को, विद्वानों विचारकों व चिन्तकों के द्वारा आत्म चिन्तन एवं अध्ययन कर एवं सन्दर्भ व सामाजिक शैक्षणिक स्थिति में आशातित उन्नति व विकास देखा जा रहा है। भारतीय संवैधानिक, लौकतन्त्र प्रणाली में भी दलितों का स्वतन्त्रता, समानता मौलिक अधिकार व नीति निर्देशक तत्वों द्वारा राष्ट्रीय धारा से जुड़े है। राजनैतिक क्षेत्र के केन्द्रीय व राज्यों में प्रति निधित्व भी प्राप्त हुये है। डॉ. अम्बेडकर द्वारा अथक प्रयास से दलितों में आरक्षण द्वारा शिक्षा व सरकारी नौकरियों में भी लाभ मिला है एवं दलित चिन्तन व विचार दर्शन से दलितोद्धार होकर अभिशाप से भी मुक्ति मिली है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *डा0 भीमराव अम्बेडकर – जीवत्व दर्शन प्रकाशन – पंचशील प्रकाशन, जयपुर*
2. *मौसर सी. पी. (1961) सर्च मैथड इन सौशल इन्वेस्टीगेशन प्र0 271*
3. *अनीला जोशी – भारत के स्वाधीनता संघर्ष में धार्मिक व सामाजिक आन्दोलन प्र. स. 67*
4. *महात्मा फूले ज्योतिराव – ''गुलामी'' प्रकाशन दूर्थ सिकर्स इन्टन्चेशन नई दिल्ली 1273*
5. *डा0 जाटव. डी. आर (1982–1–4) डा0 अम्बेडकर का मानव अधिकार आन्दोलन*
6. *डा0 सुर्वणा रावल – दलितो की सामाजिक प्रकाशन – हिन्दी बुक सेन्टर नई दिल्ली*
7. *प्रोपूखमल – गांधी अम्बेडकर एवं दलितों उद्धार आन्दोलन प्रकाशन – हिन्दी बुक सेन्टर नई दिल्ली (2011)*
8. *भटनागर मोहनराव – डा0 अम्बेडकर का चिन्तन और प्रकाशन – जगत एण्ड सन्स व सरस्वती भण्डार गांधी नगर दिल्ली 1995*